Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-B

स्वाधीनता आंदोलन में
हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar Publications

Impact Factor – 8.575 **ISSN – 2278-9308**

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January -2023

ISSUE No - (CCCLXXXIII) 383 -B

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. M.N. Kolpuke
Principal,
Executive-Editors
Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga Dist. Latur

Dr. Govind G. Shivshette
Editors
Department of Hindi Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga

Aadhar International Publication
For Details Visit To : **www.aadharsocial.com**
© **All rights reserved with the authors & publisher**

42	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता **डॉ. मारोती यमुलवाड**	162
43	राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता **प्रा डॉ. अनिलकुमार रामधन राठोड़**	166
44	स्वाधीनता अंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान **प्रा. डॉ. शेख सादिकअली हबीबसाब**	171
45	स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी भाषा की भूमिका **डॉ. युवराज राजाराम मुळये**	174
46	जयशंकर प्रसाद के नाटकों में राष्ट्र बोध **कॅप्टन डॉ.चिट्टमपल्ले ज्ञानेश्वर सोनेराव**	178
47	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान **डॉ.दिलीपकुमार रा. गुंजरगे**	181
48	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा का योगदान **प्रा.डॉ.बस्वराज शिवाजीराव धोतरे**	184
49	राष्ट्रीय चेतना और हिंदी काव्य **डॉ . प्रा . संतोष विजय येरावार**	186
50	स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचंद का कथा-साहित्य **डॉ. अनघा तोडकरी**	191
51	हिन्दी पत्रकारिता के विकास में आर्य समाज के योगदान का अध्ययन **डॉ .कमल किशोर उपाध्याय , मेजर नूपुर गुप्ता**	193
52	जयशंकर प्रसाद की राष्ट चेतना - बंधनों से मुक्ति की कामना **प्रा.डॉ.मनोहर ग. चपळे**	198
53	राष्ट्रीय हिन्दी काव्यधारा और मैथिलीशरण गुप्त **डॉ.गोविंद शिवशेट्टे**	201
54	स्वाधीनता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता का योगदान **डॉ. सुरेश मुंढे**	210
55	भारतेन्दु हरिश्चंद्र व पत्रकारिता **डॉ पूर्णिमा श्रीनिवासन**	212
56	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास **डॉ. पूनम एस शर्मा.**	216
57	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य **डॉ. तरन्नुम खान**	219
58	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी फिल्मों का योगदान **डॉ.मेदिनी अंजनीकर**	222

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal

Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- B

ISSN : 2278-9308

January, 2023

भारतेन्दु हरिश्चंद्र व पत्रकारिता

डॉ पूर्णिमा श्रीनिवासन

Asst.Prof&Head, Dept.of Hindi,VISTAS,

Chennai 600117 mob:9884026296

हिंदी साहित्य के अनुसार आधुनिक काल १९०० से प्रारम्भ होता है। है। यह काल भारतीय इतिहास की दृष्टि में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह वही स्वर्णिम समय है जब भारत को आज़ादी मिली । यह वही काल है जब भारत के लिए अपनी राष्ट्र भाषा मिली। यह वही बेला है जब समूचे भारत वासियों के रग-रग में देश-भक्ति की भावना का सञ्चालन हुआ। अंग्रेजों के आगमन के कारण हम नई साहित्यिक विधाओं से वाकिफ हुए हैं । इसके अंतर्गत पत्रकारिता भी एक ऐसा क्षेत्र है जो अंग्रेजों की देन है। इस के सफल और सही प्रयोग की वजह से हम भारतवासियों में देश भक्ति की भावना जागृत हुई।

हिंदी पत्रकारिता का बीज राजा राम मोहन रॉय ने १८२९ में "बंग दूत " नामक पत्र से बोया था । १८२६ में पं. जुगल किशोर ने हिंदी का पहला समाचार पत्र "उदन्त मार्तण्ड", कलकत्ता से निकाला। १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी के बजाय रानी विक्टोरिया के हाथ में गया। परिणामस्वरूप अंग्रेजों के दमनकारी नीतियों में वृद्धि हुई। भारत में किसी भी क्षेत्र में, विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं रही। इस कारण समग्र भारतवर्ष में उपनिवेश विरोधी और स्वतंत्रता प्राप्ति की चेतना जागृत हुई। इस विकट परिस्थिति में नवयुग के अग्रदूत व हिंदी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चंद्र (१८६७-१९००) का पदार्पण हूआ था।

१८६७ - १९०० तक के काल में हिंदी साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में , आधुनिक हिंदी साहित्य व पत्रकारिता के पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चंद्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने न केवल स्वयं विभिन्न समाचार पत्र - पत्रिकाओं का संपादन किया , अपितु लेखकों एवं सम्पादकों का एक मंडल बनाया। इस मंडल ने हिंदी साहित्य व पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी लेखनी चलायी। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतवासियों में राष्ट्रीय चेतना जगाने में अप्रतिम योगदान दिया।

विशेषत: भारतीय जन मानस में सांस्कृतिक पुनरुत्थान द्वारा राष्ट्रीय चेतना जगाने और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लड़ने में पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अत: १९०० १९वीं सदी के उत्तरार्ध में देश-प्रेम तथा राष्ट्र राष्ट्रीय चेतना से जुड़े अनेक जातीय , सांप्रदायिक, धार्मिक, प्रकार की पत्र-पत्रिकाएं निकलने लगे लगीं।

इस समय के पत्र-पत्रिकावांओं में प्रकाशित समाचारों तथा लेखों पर जनसामान्य सामान्य जनता अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगी। उक्त विचारों से उद्वेलित होने लगी।

भारतेन्दु जी ने पत्रिका रूपी सशक्त शस्त्र से भारत वासियीं में किस प्रकार राष्ट्रीय चेतना की भावना को जगाया, इसका संक्षिप्त वर्णन इस आलेख में देखेंगे ।

भारतेन्दु और 'कविवचन सुधा' :

'कविवचन सुधा' नामक पत्रिका, आम आदमी तक अपने विचारों को ले जाने के लिए भारतेन्दु जी द्वारा सम्पादित पत्रिका १८६७ को वाराणसी में प्रारम्भ हुआ। है। इस कविता केंद्रित पत्रिका ने हिंदी साहित्य और हिंदी पत्रकारिता को नए आयाम प्रधान किये। डॉ रामविलास शर्मा के अनुसार कविवचन सुधा का प्रकाशन करके भारतेन्दु ने एक नए युग का सूत्रपात किया। इस दौरान उन्होंने हिंदी भाषा के परिष्कार एवं खड़ीबोली हिंदी गद्य को व्यवस्थित रूप देने में सफल प्रयास किया। साथ ही राष्ट्रीय भावना का व्यापक स्तर पर प्रचार - प्रसार हुआ था।

अपनी पत्रकारिता के माध्यम से भारतेन्दु ने स्वदेशी का समर्थन, अंग्रेजों के दमनकारी नीतियों का जबरदस्त विरोध किया। 'कविवचन सुधा' की सहायता से विदेशी वस्तुवों का बहिष्कार, भारत के आर्थिक विकास

, सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन, देशवासियों को आधुनिक प्रगति से अवगत कराना, शिक्षा का प्रचार - प्रसार, आदि सामयिक मांगों की भरपाई संभव हुई।

ब्रिटिश शासकों की कठोर नीतियों की कटु आलोचना, भारतवासियों को स्वाधीनता के लिए प्रेरित करना, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, जाति प्रथा, जैसी सामाजिक कुरीतियों के प्रति इन्होंने अपनी तेज लेखनी चलायी।

भारतेन्दु और हरिश्चंद्र मैगज़ीन :

'हरिश्चंद्र' मैगज़ीन का प्रकाशन १८७३ में हुआ। आगे चलकर इस मैगज़ीन का नाम 'हरिश्चंद्र चन्द्रिका' बन गया। अपनी समकालीन पत्रिकवोंओं की तुलना में यह सर्वाधिक सुव्यवस्थित स्थित ढंग से सम्पादित पत्रिका रही। इस पत्रिका में राष्ट्रीय चेतना की धुन को तीव्रता देने की चेष्टा की गयी। देश भक्ति को जगाना , बढ़ाना, सांस्कृतिक एकता सुदृढ़ करना, परिष्कृत शुद्ध हिंदी का बढ़ावा देना, आम जनता में राजनितिक जागृति लाना, आदि इस पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य रहा।

समाज का प्रतिनिधित्व करना तथा जनसाधारण को मार्ग दर्शन प्रदान करना इस पत्रिका की विशिष्टता रही। अपनी स्पष्टवादिता और अंग्रेज सरकार के विरुद्ध लेख लिखने के कारण भारतेन्दु को कई बार सरकारी प्रताड़ना भी झेलनी पड़ी। इस पत्रिका ने हिंदी पत्रिका का आदर्श स्वरुप स्थापित किया।

भारतेन्दु और 'बालाबोधिनी' :

१८७४ में इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। भारतेन्दु यह भली-भांति जानते थे कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:। अतः नारी शक्ति के विकास तथा उन्हें समाज के सम्मानजनक स्थान दिलाना इस पत्रिका का मूल उद्देश्य रहा। यह महिलावों के लिए प्रकाशित प्रथम मासिक हिंदी पत्रिका थी। इस कारण इस पत्रिका के प्रकाशन अपने समय का एक क्रन्तिकारी कदम माना जाता था। नारी को शिक्षित करके, उसे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना इस पत्रिका का मुख्य उद्धेश्य रहा। इस उद्देश्य पूर्ति के लिए इस पत्रिका में महिलावों की समस्यावों पर प्रगतिशील दृष्टिकोण से आलेख प्रकाशित होते थे। नारी शिक्षा एवं सशक्तिकरण की दृष्टि से इस पत्रिका का हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक अनुपम स्थान रहा।

भारतेंदु की राष्ट्रिय चेतना की भावना और उत्कृष्ट पत्रकारीय कौशल से प्रभावित होकर हिंदी में विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हुईं। यथा १८७७ में 'हिंदी प्रदीप', १८७८ में 'भारत मित्र', १८७९ में 'सारसुधानिधि', १८८१ में 'केसरी', १८८३ में 'ब्राह्मण', १८८५ में 'हिंदोस्थान', आदि प्रमुख हैं।

इस युग के लेखकों ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रति जन मानस को जागृत करके स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्हें प्रेरित किया। इस युग की पत्र-पत्रिकाओं ने अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के बावजूद, इस काल में भी देश भक्ति के प्रचार-प्रसार करने की चुनौती को बखूबी निभाया। ।

भारतेन्दु मंडल के बालभट्ट के संपादन में १८७७ में 'हिंदी प्रदीप' नामक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन हुआ। यह अपने युग की सर्वाधिक दीर्घजीवी पत्रिका रही। साथ ही इस पत्रिका द्वारा देवनागरी लिपि एवं हिंदी भाषा का प्रबल समर्थन किया गया था ।

राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत साहित्य सामग्री, तत्कालीन परिस्तिथियों का सटीक चित्रण करते हुए, जन जागरण के आंदोलनों में इस पत्रिका ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी प्रबल इच्छा शक्ति , दृढ़ संकल्प, और आदर्शों के कारण यह पत्रिका निरंतर ३५ वर्षों तक प्रकाशित होती रही।

बाल गंगाधर तिलक के क्रन्तिकारी विचारों का गहरा प्रभाव इस पत्रिका पर पड़ा। फलस्वरूप इस पत्रिका को अंग्रेज सरकार के प्रकोप का भाजन बनना पड़ा। तत्पश्चात सदा के लिए इस पत्रिका को बंद करना पड़ा। इस पत्रिका ने राष्ट्रीय भावना एवं अभिव्यक्ति की आज़ादी का जो प्रश्न उठाया था, उसे परवर्ती पत्रकारों ने भी जारी रखा।

१८७८ में कलकत्ता से प्रकाशित 'भारत मित्र' बहुत कम समय में लोक प्रिय बन गया था । अपनी लोकप्रियता के कारण इस पत्रिका का प्रकाशन पाक्षिक से साप्ताहिक होने लगा। बाल मुकुंद गुप्त के संपादन काल में इस पत्रिका के उत्तेजक लेखों ने भारतीय जनता में राष्ट्रीय चेतना जगाई। बंगाल विभाजन के विरोध में हुए

आंदोलन का नेतृत्व "भारत मित्र" पत्रिका ने ही किया था। इस पत्रिका ने विभाजन की कटु आलोचना भी की थी। अन्य पत्र - पत्रिकाओं ने भी इस पत्रिका के साथ मिलकर लोगों को विभाजन के दुष्परिणाम के प्रति देशवासियों को जागृत किय।

१८७९ में प्रकाशित "सार सुधा निधि" पत्रिका ने भी जन मानस को स्वतंत्रता के प्रति जागृत करने में महत्व पूर्ण भूमिका निभाई। राजनितिक विषयों पर गहन अध्ययन के बाद इस पत्रिका में प्रकाशित सारगर्भित लेख तथा टिप्पणियोंने भारतवासियों को राजनीतिक विषयों पर जागरूकता प्रदान की।

१८८१ में प्रकाशित 'केसरी' पत्र ने जन मानस में राष्ट्रीय चेतना को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाल गंगाधर तिलक, १८९० में इसके संपादक बने। तिलक की उग्र विचारधारा से ओतप्रोत सम्पादकीय ने , जनमानस में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने की भावना पैदा की।

१८७९ में प्रकाशित "सार सुधा निधि" पत्रिका ने भी जन मानस को स्वतंत्रता के प्रति जागृत करने में महत्व पूर्ण भूमिका निभाई। राजनीतिक विषयों पर गहन अध्ययन के बाद इस पत्रिका में प्रकाशित सारगर्भित लेख तथा टिप्पणियों ने भारतवासियों को राजनितिक विषयों पर जागरूकता प्रदान की।

प्रताप नारायण मिश्रा के संपादन में 'ब्राह्मण' पत्रिका १८८३ में प्रकाशित हुई। उस समय के समस्त प्रतिष्ठित लेखकों के लेख इस पत्रिका में प्रकाशित हुए। इन लेखों ने आम जनता में स्वदेश प्रेम , हिंदी भाषा के प्रति प्रेम भावना जगाई । दहेज़ प्रथा , अशिक्षा, धार्मिक कटटरता , आदि सामाजिक समस्यावों से सम्बंधित लेख भी इस पत्रिका में प्रकाशित हुए। अपने १३ वर्षों की प्रकाशन-अवधि के दौरान इस पत्रिका ने हिंदी जगत के लिए कई उत्कृष्ट निबन्ध प्रदान किये।

इस पत्रिका में हास्य व्यंग्य लेखों की प्राधान्यता रही। लोक मत को अंग्रेज सरकार के सामने निर्भीकता से पहुँचाने में यह पत्रिका सफल रही। 'हिन्दुस्थान' नामक अंग्रेजी पत्र पंडित मदन मोहन मालवीय के संपादन काल में हिंदी के प्रथम दैनिक पत्र के रूप में प्रकाशित होने लगा । बाल मुकुंद गुप्त, प्रताप नारायण मिश्रा, आदि यशस्वी पत्रकारों ने इस पत्र का संपादन किया। इस पत्र का प्रकाशन २७ वर्षों तक हुआ। सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, विषयों के साथ साथ कांग्रेस की विचारधारा का समर्थन इस पत्र के माद्यम से होने लगा।

इस श्रुंखला में १८९१ में बदरी नारायण चौधरी ने "नगरी नीरद" पत्रिका का प्रकाशन किया।

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि जनमानस में राष्ट्रीय चेतना की भावना को जगाना , अंग्रेजी शासन का विरोध, स्वतंत्रता प्राप्ति तथा सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन भारतेन्दु युग की पत्रकारिता का मूल उद्देश्य रहा है। अपने उद्देश्य में वे सफल भी हुए। इस युग के पत्रकारों का उद्देश्य किसी भी प्रकार की व्यावसायिक पत्रकारिता को प्रश्रय देना नहीं था। अपने आदर्शों के कारण इस युग की पत्रकारिता ने विपरीत परिस्थितियों में भी अनुकरणीय कार्य करके पत्रकारिता के क्षेत्र में नवीन प्रतिमान स्थापित किया। इस युग की पत्रकारिता में व्याप्त सत्यता, कर्मठता, निर्भीकता, निस्वार्थता , तटस्तता , आदि गुणों से प्रेरणा मिलती है। अत: इस युग को **पत्रकारिता का आदर्श युग** कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा ।

सन्दर्भ सूचि :

I. www.wikepedia.com

2.http://nationalarchives.nic.in/writereaddata/html_en_files/html/44.Swatantrata%20Sangram%20aur%20Hindi.pdf

3.https://www.hastakshep.com/role-of-media-in-freedom-struggle/

4.https://samaysakshya.co.in/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A4%BE-

%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE-%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82-%E0%A4%B9/

5.https://hindivivek.org/436

6.https://newsonair.com/hindi/2022/05/30/hindi-journalism-day-today/

7.https://www.jagran.com/delhi/new-delhi-city-ncr-world-press-freedom-day-freedom-movement-and-journalism-jagran-special-22667435.html